रेवतीनां चत्वारि च॥ अनु॰ हा विश्वतिक्षा त्वधा द्यदिन्द्यि गुक्ष । अपानानिष्ट

दशमाऽनवाकः।

देवं बर्हिरिन्द्र सदेवं देवैः। वीरवत्स्तीसं वेद्याम-वर्डयत्। वस्तिर्छतं प्राक्तिर्मतं। राया बहिसताऽत्यगात्। वस्वने वस्धेयस्य वेतु यजा। देवोद्दार्द्र सङ्घाते। विडीय्यामन्ववर्धयन्। आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च-मी विता अपार्वाणं। रेणुककारं नुदन्तां। वसुवने व सुधयस्य वियन्तु यज ॥ १॥

देवी उषा सा नता। इन्हें यज्ञे प्रयत्य दक्तां। देवी-र्विशः प्रायासिष्टां। सुप्रीते सुधिते अभूतां। वसुवनं व-सुधेयस्य वीतां यज। देवी जाष्ट्री वसुधिती। देविमन्द्र-मवर्डतां। अयाव्यन्याघा देषाः सि। आन्यावाष्ट्रीद-स्वाय्याणि। यजमानाय शिक्षिते॥ २॥

वस्वने वस्धयस्य वीतां यज। देवोजजीहृती दुधे सुद्धे। पयसेन्द्रमवर्द्धतां। इषमूर्जमन्यावाद्यीत्। स-गिधः सपीतिमन्या। नवेन पूर्वं दयमाने। पुराणन नवं। अधातामूर्जमूर्जाहती वसुवीय्याणि। यजमाः नाय शिक्षिते। वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज ॥ ३॥